''मीठे बच्चे – अभी तुम बाप, टीचर, सतगुरू – तीनों के सम्मुख बैठे हो, बाप की यही कृपा है जो टीचर बन तुम्हें पढ़ा रहे हैं, सतगुरू बन साथ में ले जायेंगे''

प्रश्नः- तुम बच्चों का बाप से कौन-सा वायदा है? तुम्हारा कर्तव्य क्या है?

उत्तरः- बाप से वायदा है – बाबा, हम आपसे जो कुछ सुनते हैं वह दूसरों को भी अवश्य सुनायेंगे। आप समान बनायेंगे। हमारा कर्तव्य है – बाप समान सबको पढ़ाना क्योंकि अभी बुद्धि का ताला खुला है। जैसे हम वर्सा ले रहे हैं ऐसे रहमदिल बन दूसरों को भी वर्सा दिलाना है।

गीतः- ले लो दुआयें माँ-बाप की...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) पढ़ाई में मात-पिता को फालो करना है। खुशी में रहना है कि ऊँचे ते ऊँचे धाम से भगवान् हमें पढ़ाने आते हैं।
2) अब हमें वापस स्वीट होम जाना है, इसलिए अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। देह सहित सब कुछ भूल जाना है।

वरदानः- आवाज से परे श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रह शान्ति की शक्ति का अनुभव करने वाले मास्टर बीजरूप भव

आवाज से परे रहने की श्रेष्ठ स्थिति सर्व व्यक्त आकर्षणों से परे न्यारी और प्यारी शक्तिशाली स्थिति है। एक सेकण्ड भी इस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित हो जाओ तो उसका प्रभाव सारा दिन कर्म करते हुए भी स्वयं में विशेष शान्ति की शक्ति का अनुभव करेंगे। इसी स्थिति को कर्मातीत स्थिति, बाप समान सम्पूर्ण स्थिति कहा जाता है। यही मास्टर बीजरूप, मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति है, इस स्थिति द्वारा हर कार्य में सफलता का अनुभव होता है।

स्लोगनः- महान आत्मा वह है जिसका हर बोल महावाक्य है।

''मीठे बच्चे – तुम इस रूहानी युनिवर्सिटी में आये हो बुद्धू से बुद्धिवान बनने, बुद्धिवान अर्थात् पवित्र, पवित्र बनने की पढ़ाई तुम अभी पढ़ते हो''

प्रश्नः- बुद्धिवान बच्चों की मुख्य निशानी सुनाओ?

उत्तरः- बुद्धिवान बच्चे ज्ञान में सदा रमण करते रहेंगे। उन्हें मौलाई मस्ती चढ़ी हुई होगी। उनकी बुद्धि में सारे सृष्टि चक्र की नॉलेज रहती। नशा रहता कि हमारा बाबा हमारे लिए परमधाम से आया हुआ है। हम उनके साथ परमधाम में रहते थे। हमारा बाबा ज्ञान का सागर है, हम अभी मास्टर ज्ञान सागर बने हैं। हमें वह मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देने आये हैं।

गीतः- कौन आया मेरे मन के द्वारे...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बुद्धि से सब कुछ सरेन्डर कर ट्रस्टी हो रहना है। बहुत सम्भाल से श्रीमत प्रमाण हर कार्य करना है।

2) बाबा और वर्से को याद कर अपार खुशी का अनुभव करना है। बाबा की याद में मौलाई बन जाना है। सच्चा आशिक बनना है।

वरदानः- समाने और समेटने की शक्ति द्वारा एकाग्रता का अनुभव करने वाले सार स्वरूप भव

देह, देह के सम्बन्धों वा पदार्थों का बहुत बड़ा विस्तार है, सभी प्रकार के विस्तार को सार रूप में लाने के लिए समाने वा समेटने की शक्ति चाहिए। सर्व प्रकार के विस्तार को एक बिन्दू में समा दो। मैं भी बिन्दु, बाप भी बिन्दु, एक बाप बिन्दु में सारा संसार समाया हुआ है। तो बिन्दु रूप अर्थात् सार स्वरूप बनना माना एकाग्र होना। एकाग्रता के अभ्यास द्वारा सेकण्ड में जहाँ चाहो, जब चाहो बुद्धि उसी स्थिति में स्थित हो सकती है।

स्लोगनः- जो सदा रूहानियत की स्थिति में रहते हैं, वही रूहानी गुलाब हैं।

''मीठे बच्चे – तुम्हारा यह जन्म बहुत ही अमूल्य है, क्योंकि बाप स्वयं इस समय तुम्हारी सेवा करते हैं, लक्ष्य सोप से तुम्हारे वस्त्र साफ करते हैं''

प्रश्नः- जो अल्लाह को सृष्टि का रचयिता कहते हैं उनसे कौन-सा प्रश्न पूछना चाहिए?

उत्तरः- उनसे पूछो – जब अल्लाह ने सृष्टि रची तो रचना के लिये उन्हें फीमेल चाहिये, भला अल्लाह की फीमेल कौन? गॉड फादर कहते हो तो जरूर मदर भी चाहिये ना। तुम बच्चे इस गुह्य राज़ को अच्छी तरह से जानते हो। अल्लाह की फीमेल है यह ब्रह्मा। यह है तुम्हारी बड़ी माँ। इस बात को मनुष्य समझ नहीं सकते।

गीतः- किसने यह सब खेल रचाया...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) गद्दी-नशीन पक्का वारिस बनने के लिये पवित्रता की प्रतिज्ञा कर सगा बच्चा बनना है, और संग तोड़ एक संग जोड़ना है।

2) आप समान बनाने की सेवा करनी है। काँटे से कली, कली से फूल बनना और बनाना है। नये झाड़ की कलम लगानी है।

वरदानः- कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बन धर्मराज़पुरी की सजाओं से बचने वाले विकर्माजीत भव

सजाओं के अनुभव को ही धर्मराजपुरी कहते हैं, बाकी धर्मराजपुरी कोई अलग स्थान नहीं है, लास्ट में अपने किये हुए पाप जमदूत के डरावने रूप में सामने आते हैं। उस समय पश्चाताप और वैराग्य की घड़ी होती है, छोटे-छोटे पाप भी भूत की तरह लगते हैं। पश्चाताप की त्राहि-त्राहि होती है, इसलिए उन सजाओं की फीलिंग से बचने के लिए कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बन सदा श्रेष्ठ कर्म करो और विकर्माजीत बनो।

स्लोगनः- जो तन-मन-धन से बाप पर पूरा बलिहार जाते हैं वही गले का हार बनते हैं।

''मीठे बच्चे – शिवबाबा का चित्र एक कोठरी में रख दो, घड़ी-घड़ी जाकर उसके सामने बैठ बातें करो, तो सारा दिन याद बनी रहेगी''

प्रश्नः- नया और अनोखा प्यार कौन-सा है, जिसकी अनुभूति केवल संगम पर ही होती है?

उत्तरः- विचित्र बाप के साथ प्यार करना – यह है नया प्यार। तुम जानते हो निराकार विचित्र बाबा इस साकार में आया हुआ है, हम उनके सामने बैठे हैं, हमें संगम पर डायरेक्ट ईश्वर का प्यार मिलता है – यह है नया और अनोखा प्यार। सारा कल्प देहधारियों से प्यार किया, अब विदेही बाप से प्यार करना है। ऐसा प्यार संगम पर ही होता है।

गीतः- कौन आया मेरे मन के द्वारे...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) सभी की याद को समेट, बुद्धियोग सभी से तोड़ एक बाप की याद में रहना है। शिवबाबा की कोठी बनाए उनकी अव्यभिचारी याद में बैठना है।

2) अपने आपसे मीठी-मीठी बातें करनी है। हम पहले कितने सुन्दर (गोरे) थे, फिर 84 जन्म लिए, अब खुशी से वापिस जाते हैं – ऐसे अपने साथ बातें कर स्वदर्शन चक्र फिराना है।

वरदानः- स्वचिंतन और स्वदर्शन द्वारा हीरे समान अमूल्य जीवन का अनुभव करने वाले बेदाग भव

हीरे समान अमूल्य जीवन का अनुभव करने के लिए सदा स्वचिंतन करो और स्वदर्शन चक्रधारी बनो क्योंकि हीरे को दागी बनाने वाली केवल दो बातें हैं – एक परदर्शन, दूसरा परचिंतन। यही दो बातें संग के रंग में स्वच्छ हीरे को दागी बना देती हैं, इसलिए इस मूल बीज को समाप्त कर स्वचिंतन करो और स्वदर्शन चक्र फिराओ तो धूल और दाग लग नहीं सकता। सदा बेदाग सच्चा हीरा, चमकता हुआ अमूल्य हीरा बन जायेंगे।

स्लोगनः- विचित्र बाप के चित्र और चरित्र को याद करने वाले ही चरित्रवान हैं।

''मीठे बच्चे – सारी सृष्टि का पालनकर्ता एक बाप है, वह कभी किसी की पालना नहीं लेते, सदा निराकार हैं – यह बात सिद्ध कर सबको समझाओ''

प्रश्नः- गॉडली स्टूडेन्ट की पहली मुख्य निशानी क्या होगी?

उत्तरः- गॉडली स्टूडेन्ट कभी भी मुरली सुनने बिगर नहीं रह सकते। वह ऐसे नहीं कहेंगे कि हमें मुरली सुनने की फुर्सत ही नहीं मिलती। जहाँ भी हैं प्वाइन्ट्स मँगाकर भी पढ़ेंगे। कितनी अथाह प्वाइन्ट्स चलती हैं! अगर मुरली नहीं सुनेंगे तो धारणा कैसे होगी? यह पढ़ाई है, सुप्रीम टीचर पढ़ाने वाला है तो बच्चों को मुरली कभी मिस नहीं करनी चाहिए।

गीतः- तुम्हें पाके हमने....

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) अच्छा होशियार सेल्समैन बन अविनाशी ज्ञान-रत्नों का व्यापार करना है। अविनाशी प्रालब्ध बनाने के लिए अपना बुद्धियोग एक बाप से लगाना है।

2) पास विद ऑनर होने के लिए सच्चा-सच्चा आशिक बनना है। निरन्तर एक माशूक की याद में रहना है।

वरदानः- सर्वशक्तिमान के साथी बन सर्व के प्रति शुभ भावना रखने वाले चिंतन वा चिंता मुक्त भव

कई बच्चे चिंतन करते हैं कि फलाने की बीमारी ठीक हो जाए, बच्चा वा पति ज्ञान में चल जाए, धन्धा ठीक हो जाए... यह भावना तो अच्छी है, लेकिन आपकी यह चाहनायें पूर्ण तब होंगी जब स्वयं हल्के हो बाप से शक्ति लेंगे। इसके लिए बुद्धि रूपी बर्तन खाली चाहिए। सभी का कल्याण चाहते हो तो स्वयं शक्तिरूप बन सर्वशक्तिमान के साथी बन शुभ भावना रख चलते चलो। चिंतन वा चिंता मुक्त बनो, बंधन में नहीं फँसो।

स्लोगनः- जो प्रश्नों से पार रहते हैं वही सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं।

''मीठे बच्चे – आप मुये मर गई दुनिया, बाप का बनना अर्थात् देह-अभिमान टूटना, एक बाप के सिवाए और कुछ भी याद न आये''

प्रश्नः- अन्त का समय समीप देखते हुए कौन-सा स्लोगन सदा याद रखना है?

उत्तरः- ''किनकी दबी रहेगी धूल में, किनकी राजा खाए...'' – यह स्लोगन सदा याद रखो क्योंकि अभी दु:ख के पहाड़ गिरने हैं, सबका मौत होना है। तुम बच्चे तो अभी बाप पर पूरा बलि चढ़ते हो, तुम्हारा सब-कुछ सफल हो रहा है। तुम एक जन्म बलि चढ़ते, बाप 21 जन्मों के लिए बलिहार जाता है। 21 जन्म तुम्हें लौकिक माँ-बाप के वर्से की दरकार नहीं। द्वापर से फिर जैसा कर्म वैसा फल मिलता है।

गीतः- मैं एक नन्हा सा बच्चा हूँ...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) स्वराज्य के लिए बाप पर बलि चढ़ना है। एम-ऑब्जेक्ट सदा सामने रखनी है। पुरुषार्थ कर सूर्यवंशी बनना है।

2) बाप से जो ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है, वह सदा खुला रहे। माया की प्रवेशता न हो जाए, इसका पूरा ध्यान रखना है। योग अग्नि से विकर्माजीत बनना है।

वरदानः- सर्व सम्बन्धों से बाप को अपना बनाकर एकरस रहने वाले नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप भव

नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनने के लिए सर्व संबंधों से बाप को अपना बनाओ। किसी भी दैहिक संबंध में बुद्धि का लगाव न हो। अगर कहीं भी लगाव होगा तो बुद्धि भटकेगी। बैठेंगे बाप को याद करने और याद वही आयेगा जिसमें मोह होगा। किसका मोह पैसे में होता है, किसका जेवर में, किसका किसी संबंध में... जहाँ भी होगा वहाँ बुद्धि जायेगी। अगर बार-बार बुद्धि जाती है तो एकरस नहीं रह सकते।

स्लोगनः- प्रकृति को दासी बना दो तो उदासी दूर भाग जायेगी।

''सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा की निशानी – सन्तुष्टता और प्रसन्नता''

❖ आज सर्व प्राप्तियाँ कराने वाले बापदादा अपने चारों ओर के प्राप्ति सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। बापदादा देख रहे हैं कि हर एक अधिकारी बच्चों ने अपने में प्राप्तियों का अधिकार कितना प्राप्त किया है?

❖ सम्पूर्ण अधिकार वा सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा जो सदा अमृतवेले से रात तक प्राप्तियों के नशे वा अनुभव में रहती है, उनकी निशानी क्या होगी? प्राप्तियों की निशानी है सन्तुष्टता। वो सदा सन्तुष्टमणि बन दूसरों को भी सन्तुष्टता की झलक का वायब्रेशन फैलाते रहते हैं। उनका चेहरा सदा प्रसन्नचित्त दिखाई देगा। कोई प्रश्न नहीं होगा, प्रसन्न होगा।

❖ जिसका प्रसन्नचित्त होता है उसके मन-बुद्धि के व्यर्थ की गति फास्ट नहीं होगी। सदा निर्मल, निर्मान। निर्मान होने के कारण सभी को अपने प्रसन्नचित्त की छाया में शीतलता देंगे।

❖ सबसे सहज सदा सन्तुष्ट रहने की विधि है – सदा अपने सामने कोई न कोई विशेष प्राप्ति को रखो क्योंकि प्राप्ति भूलती नहीं है। कभी कोई, कभी कोई गुण की प्राप्ति को सामने रखते हुए सन्तुष्ट रहो। अगर प्राप्ति इमर्ज रूप में होगी तो प्राप्ति के आगे अप्राप्ति खत्म हो जायेगी और सदा सन्तुष्ट रहेंगे।

वरदान:- हर सेकण्ड स्वयं को भरपूर अनुभव कर सदा सेफ रहने वाले स्मृति सो समर्थ स्वरूप भव

बापदादा द्वारा संगमयुग पर जो भी खजाने मिले हैं उनसे स्वयं को सदा भरपूर रखो, जितना भरपूर उतना हलचल नहीं, भरपूर चीज़ में दूसरी कोई चीज़ आ नहीं सकती, ऐसे नहीं कह सकते कि सहनशक्ति वा शान्ति की शक्ति नहीं है, थोड़ा क्रोध या आवेश आ जाता है। कोई दुश्मन जबरदस्ती तब आता है जब अलबेलापन है या डबल लाक नहीं है। याद और सेवा का डबल लाक लगा दो, स्मृति स्वरूप रहो तो समर्थ बन सदा ही सेफ रहेंगे।

स्लोगन:- विश्व का नव निर्माण करने के लिए अपनी स्थिति निर्मानचित्त बनाओ।